पाठ-2

जल ही जीवन है

- संकलित

आइए सीखें

■ जल-संरक्षण का महत्व ■ जल-संरक्षण की वैज्ञानिक तकनीक ■ पर्यायवाची और विलोम शब्द ■ मानक भाषा।

जल के बिना जीवन संभव नहीं। प्रकृति द्वारा दिया गया, जीवों को मिला यह अनुपम उपहार है। प्राचीन काल से जल को देवताओं का वरदान माना गया है। गंगा के जल को अमृत और गंगा को पतित-पावनी कहा गया है। इस अमूल्य धरोहर का संरक्षण कर हम वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों को सुखद, समृद्ध और खुशहाल रख सकते हैं।

पृथ्वी पर उपलब्ध जल और वर्षा के जल को बरबाद होने से बचाना, उसको संचित करना और उसकी सुरक्षा करना जल-संरक्षण के अन्तर्गत आता है। उसका संरक्षण हम और आप मिलकर कर सकते हैं। आवश्यकता है, इसके प्रति सभी को सचेत होने की और इसके संरक्षण के लिए एकजुट होकर पहल करने की।

भू-जल अमूल्य है। हम स्वार्थवश जल स्रोतों का अंधाधुंध दोहन कर रहे हैं। धीरे-धीरे हम इन स्रोतों को खत्म करते जा रहे हैं। बोरिंग अथवा नल-कूपों के माध्यम से आवश्यकता से अधिक जल निकालकर हम जिस प्राकृतिक जल-भण्डार को लगातार खाली कर रहे हैं, यदि हम चाहें तो थोड़ा-सा धन का व्यय और श्रम करके उसका

शिक्षण संकेत

▸ शिक्षक जल का महत्व और जल-संरक्षण की आवश्यकता छात्रों को बताएँ ▸ वर्षा के जल को बचाने की विभिन्न तकनीकों की जानकारी दें ▸ पर्यावरण संरक्षण की चेतना जागृत करें ▸ पर्यायवाची और विलोम शब्दों को वाक्य-प्रयोगों के द्वारा समझाएँ।

संरक्षण कर सकते हैं। भूमि के भीतर जो जल है, उसे अनेक विधियों द्वारा संरक्षित कर हम वसुन्धरा का ऋण चुका सकते हैं।

राजस्थान के जिन क्षेत्रों में पारम्परिक विधियों से जल-संरक्षण का काम हुआ है, वहाँ की स्थिति अब पूरी तरह बदल गई है। भू-जल स्तर के बढ़ने से कुएँ जी उठे हैं, हरियाली वापस आ गई है, धरती की उर्वरा-शक्ति लौट आई है, फसल-चक्र भी बदल गया है, अरावली की पहाड़ियों पर फिर से पेड़-पौधे उगने लगे हैं।

जल-संरक्षण के लिए हम सब मिलकर प्रयास कर सकते हैं। जैसे—छोटे-छोटे बाँध बनाए जाएँ, सूख चुके कुएँ-बावड़ियों को गहरा कर उन्हें फिर से जीवित किया जाए तथा नदियों को आपस में मिलाया जाए इत्यादि। बरसाती पानी का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है। हमारा प्रयास इस तरह हो कि वर्षा का पानी बहकर व्यर्थ न जाए। उस पानी को छोटे-छोटे बाँध बनाकर रोक लिया जाए। पानी रुकेगा तो धरती में समा जाएगा। जिससे आस-पास के कुओं का जलस्तर भी ऊपर उठेगा। सूखी धरती को पानी मिलने से हरियाली होगी और खेती को भी लाभ होगा।

आज जबकि हर जगह पानी की किल्लत है, इस किल्लत को दूर करने का काम निश्चय ही प्रेरक और अनुकरणीय है। पानी बचाने के इस काम की बदौलत राजेन्द्र सिंह को मिले सम्मान ने भी हमारी परम्पराओं की प्रासंगिकता को पुष्ट किया है। नि:सन्देह इन्हीं परम्पराओं पर विश्वास कर राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और गुजरात में कई जगह जल-संरक्षण का काम हुआ है।

राजस्थान में अगर परम्पराओं को आधार बनाकर काम हो रहा है तो गुजरात में कुछ काम वैज्ञानिक तकनीक की मदद लेकर भी चल रहा है। वैज्ञानिक तकनीक की मदद उस स्थान की पहचान करने में ली जाती है, जहाँ पानी इकट्ठा किया जा सकता है। इस तकनीक का नाम है-'रिमोट-सेंसिंग।' इस तकनीक के माध्यम से धरती के किसी भी हिस्से का चित्र लिया जा सकता है। इन चित्रों में धरती की आन्तरिक रचना स्पष्ट हो जाती है। आन्तरिक रचना जानकर यह अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है कि कौन-सी जगह पानी जमा किया जा सकता है। इससे यह भी पता चल जाता है कि ज़मीन के भीतर पानी किस गति से रिसेगा।

उल्लेखनीय है कि जल-संरक्षण के महत्व को स्वीकार करते हुए विश्वविद्यालयों ने इसके लिए एक पाठ्यक्रम की भी घोषणा की है। विडम्बना यह है कि जल-संकट जिस तेजी के साथ गहरा रहा है, उस तेजी से उसका समाधान नहीं हो पा रहा है। अतएव प्रकृति की इस अनमोल देन, जल को बढ़ाने, बचाने के लिए हर-एक को जागरुक होकर अपने स्तर पर कुछ-न-कुछ करना होगा। कहीं ऐसा न हो कि इस ज्वलन्त समस्या की अब और अधिक अनदेखी करने से हमारे जल-स्रोत सूख जाएँ और हमें विवश होकर कहना पड़े, 'सूखी धरती-प्यासे लोग'।

शब्दार्थ

जीवन=जिंदगी। **अनुपम**=जिसकी कोई उपमा न हो। **पतित-पावनी**=पापियों को पवित्र करने वाली। **समृद्ध**=सम्पन्न। **संचित**=इकट्ठा किया हुआ। **संरक्षण**=भली प्रकार से सुरक्षित। **सचेत**=सावधान, सजग। **विधियाँ**=तरीके। **उपकार**=भलाई। **वसुन्धरा**=पृथ्वी। **ऋण**=कर्ज। **उर्वरा-शक्ति**=उपजाऊ-शक्ति। **प्रयास**=प्रयत्न। **किल्लत**=परेशानी।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. (क) सही जोड़ी बनाइए—

- देवताओं का – उर्वरा शक्ति
- धरती की – पाठ्यक्रम
- राजेन्द्र सिंह को – वरदान
- विश्वविद्यालय – मैगसेसे सम्मान

(ख) सही शब्द छाँटकर रिक्त-स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- भूमि के भीतर जो जल है, उसे हम अनेक विधियों द्वारा.....कर सकते हैं। (संरक्षित/दोहित)
- पानी रुकेगा तो धरती में ..... जाएगा। (समा/बह)
- बरसाती पानी का संरक्षण अत्यन्त..... है। (आवश्यक/अनावश्यक)
- रिमोट सेंसिंग एक तकनीक है जिसकी सहायता से धरती के .....चित्र खींचे जाते हैं। (आन्तरिक/बाह्य)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) गंगाजल को क्या कहा गया है?

(ख) जल संरक्षण से आप क्या समझते हैं?

(ग) राजेन्द्र सिंह को कौन-सा सम्मान प्राप्त हुआ?

(घ) जल संरक्षण की दिशा में राजस्थान के अतिरिक्त और कौन-कौन से प्रदेशों में काम प्रारम्भ हुआ है?

(ङ) हम जल भंडार को किस प्रकार खाली करते जा रहे हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) जल को देवताओं का वरदान क्यों कहा गया है?
(ख) भू-जल स्त्रोतों के अंधाधुंध दोहन से क्या हानि हो रही है?
(ग) राजस्थान में जल-संरक्षण से होने वाले लाभ बताइए।
(घ) बरसाती पानी का संरक्षण क्यों आवश्यक है?
(ङ) रिमोट-सेंसिंग तकनीक क्या है?

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

संरक्षण, वसुन्धरा, प्राकृतिक, अमृत, अंधाधुंध

5. निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए—

अर्न्तगत, रिण, वेज्ञानिक, हरयाली, स्त्रोत

6. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

अनुपम, जल-संरक्षण, पतित-पावनी, नल-कूप, जल-भण्डार

ध्यान दीजिए

- आज हर जगह पानी की किल्लत है।
- सूखी धरती को पानी मिलने से खेत को लाभ होगा।
- हमें विवश होकर न कहना पड़े, 'सूखी धरती-प्यासे लोग'।
- प्राचीन काल से जल को देवताओं का वरदान माना गया है।
- गंगा के जल को अमृत कहा गया है और गंगा को पतित-पावनी।

उपर्युक्त रेखांकित शब्दों में आज, खेत, सूखी, धरती तथा प्यासे शब्द क्रमशः अद्य, क्षेत्र, शुष्क, धरित्री तथा पिपासा संस्कृत शब्दों के परिवर्तित रूप हैं। इन्हें तद्भव शब्द कहते हैं।

इसी प्रकार प्राचीन, गंगा, अमृत तथा पावनी शब्द संस्कृत के हैं और बिना किसी परिवर्तन के हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, इन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। इन्हें भी जानिए—

तद्भव		तत्सम	तद्भव		तत्सम
अमी	–	अमृत	जीभ	–	जिह्वा
पुराना	–	प्राचीन	घर	–	गृह
काज	–	कार्य	आग	–	अग्नि
कान	–	कर्ण	दूध	–	दुग्ध
कोयल	–	कोकिल	आँख	–	अक्षि
कंधा	–	स्कंध	ओठ	–	ओष्ठ
किसान	–	कृषक	पिता	–	पितृ
आम	–	आम्र	बूँद	–	बिन्दु

7. **निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम एवं तद्भव शब्दों को छाँटिए—**
   सूत, दाँत, ऊँचा, कर्ण, सूर्य, सत्य, शीतल, आचरण
8. **निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए—**
   जल, गंगा, भूमि, पेड़, नदी, पहाड़
9. **निम्नलिखित विलोम शब्दों की सही जोड़ी बनाइए—**
   - अमृत – गरीब
   - देवता – पतन
   - उत्थान – निर्जीव
   - अमीर – दानव
   - सजीव – विष

ध्यान दीजिए

हिन्दी का क्षेत्र अति विस्तृत है। बोलियों के प्रभाव से एक ही शब्द के कई रूप प्रचलित हो जाते हैं। भाषा सीखने की दृष्टि से विद्वानों ने शब्द विशेष के जो रूप मान्य किए हैं, उन्हें मानक शब्द कहते हैं। समाचार पत्र, पत्रिकाओं, रेडियो आदि में मानक शब्दों का प्रयोग किया जाता है, यथा- धरम का मानक रूप धर्म होगा।

10. निम्नलिखित शब्दों के मानक हिन्दी रूप लिखिए—
    चरन, करम, मगन, सरन, प्रन, प्रान

अब करने की बारी

- जल-संरक्षण के आधुनिक तरीकों की जानकारी प्राप्त कीजिए।
- जल-संरक्षण के महत्व पर अपनी कक्षा में एक परिचर्चा का आयोजन कीजिए।
- 'जल-संरक्षण' से संबंधित चार्ट बनाकर अपनी शाला में लगाइए।
- जल-संरक्षण के लिए आप कौन-कौन से उपाय कर सकते हैं? सूची बनाइए।

❑❑